भूमिका

मानव संवेदनशील प्राणी है। संवेदनाओं की यही अनुभूति तथा अभिव्यक्ति और परिष्कार मानव को अन्य जीवधारियों से पृथक् करती है। मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए इनको संतुलित करना आवश्यक होताहै। फिल्में देखते समय मनुष्य अपने जीवन की वास्तविक कठिनाइयों और कटुता भुला कर कल्पनामय सुखद लोक मे विचरण करने लगता है। उसके जीवन की एकरसता दूर हो जाती है। साधारण व्यक्ति का जीवन संघर्षमय और ऊब से भरा होता है। इस नीरसता को दूर करने में फिल्म बडी प्रभावशाली भूमिका निभाता है। गरीब-से-गरीब व्यक्ति अपने जीवन के सभी अभावों और कटुताओं को कुछ देर के लिए भूल कर कल्पना-लोक में भ्रमण करने लगता है।

समाज के लोगों का मनोरंजन करने का फिल्में बडा सशक्त और सुगम साधन है। पर्दे पर देश-विदेश के मनोहारी दृश्य, हैरतअंगेज कार्य, रोमांस का वातावरण और सुन्दर तथा विशाल अट्टालिकायें आदि देखकर सभी व्यक्ति पुलकित और आनन्दित हो उठते हैं।

फिल्म आज मनोरंजन का सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम है। जीवन की प्रगति और व्यस्तता के कारण नाटकों का प्रचलन धीरे-धीरे कम होता गया और उसका स्थान फिल्म ने ले लिया। किसी समस्या को लेकर एक कहानी के माध्यम से चलचित्र का कथानक रूप लेता है, जिसमें अनेक पात्र, अनेक घटनाएँ, गीत, नृत्य, प्राकृतिक दृश्य, रहस्य, रोमांच, संवाद तथा अभिन्य का विशेष महत्व होता है। इसकी लोकप्रियता के कारणों में यह एक विशेष कारण है कि इन सबको एक ही समय में एक ही पर्दे पर देखा जा सकता है। प्रकृति के सुंदर दृश्य, विदेशों के दृश्य दर्शन को रोमांचित करते हैं। फिल्म केवल मनोरंजन का ही साधन नहीं है, अपितु यह तो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुआ है। चलचित्र ज्ञान के भी स्त्रोत होते हैं। अनेक देशों की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक तथा धार्मिक विचारधाराओं को इनसे जाना जा सकता है। अनेक वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं प्रयोगों को भी समझा जा सकता है। प्राकृतिक दृश्यों का आनंद भी इनसे मिलता है। शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक युग में चलचित्रों का विशेष तहत्व बढ़ गयाहै। बालकों को इतिहास, भूगोल, विज्ञान तथा कृषि आदि का ज्ञान चलचित्रों के माध्यम से समझाया जा सकता है। सामाजिक दृष्टि से फिल्म के द्वारा

समाज में व्याप्त रूढ़ि और अंधकार तथा बुराइयों से लोगों को परिचित कराया जा सकता है। जैसे-दहेज प्रथा, बाल-विवाह, छुआछूत आदि

फिल्म की लोकप्रियता में जितनी तीव्रता से वृद्धि हुई वह सर्वविदित है। आज जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिस पर फिल्मी प्रभाव न हो। पहले केवल पौराणिक और धार्मिक विषयों पर फिल्में बनती थीं। आज कोई भी विषय फिल्मों से अछूता नहीं रहा है। जीवन के हर पहलू पर फिल्में बन चुकी हैं। बड़ा परदा मनोरंजन का सबसे सस्ता व सुलभ साधन है। मनोरंजन के अतिरिक्त भी फिल्म के अपने फायदे हैं फिल्म के सदुपयोग द्वारा शिक्षा प्रसार तथा समाज सुधार के कार्यों में बहुत अधिक सफलता प्राप्त की जा चुकी है। फिल्म के माध्यम से देश विदेश का ज्ञान एवं उसके इतिहास, सभ्यता व संस्कृति की पहचान बड़ी आसानी से हो जाती है। चलचित्र में विज्ञापन द्वारा रोजगार और व्यापार को बढ़ावा मिलता है। फिल्मी गानों, पत्रिकाओं और फिल्मी सितारों का भी लोगों के जीवन में एक अलग स्थान है।

प्रस्तुत शोध में महिला खेल केंद्रित फिल्मों की विवेचना का अध्ययन किया गया है। यहाँ महिला खेल केंद्रित फिल्म 'चक दे इडिया', 'मैरी कॉम', 'दंगल' से समाज पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध को मुख्यतः छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। शोध विषय 'खेल केंद्रित फिल्मों की विवेचना' का अध्ययन निम्नलिखित अध्यायों के अंतर्गत किया गया है।

प्रथम अध्याय- प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्याय के द्वारा शोध विषय की जानकारी तथा उसके विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें शोध विषय का संक्षिप्त विवरण के साथ शोध के लिए प्रयोग की जाने वाली पद्धतियों को प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में शोध का क्षेत्र शोध की समस्या तथा शोध प्रणाली के सभी पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में शोध कार्य को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय- अध्ययन की पृष्ठभूमि

इस अध्याय में फिल्म की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया गया है प्रस्तुत अध्याय में फिल्म का अर्थ एवं परिभाषा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। साथ ही फिल्मों द्वारा होने वाले सामाजिक बदलाव की व्याख्या की गई है। प्रस्तुत अध्याय में फिल्मों का इतिहास, भारतीय फिल्म, खेल केंद्रित फिल्मों का स्वरूप, समाज एवं

सामाजिक बदलाव का वर्णन किया गया है। इस अध्याय में फिल्मों के इतिहास की पूर्ण व्याख्या की गई है, तथा खेल केंद्रित फिल्मों के स्वरूप का अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय- खेल केंद्रित फिल्मों से संबंधित खेलों का परिचय

इस अध्याय में खेल केंद्रित फिल्मों से संबंधित खेलों का परिचय है। इसमें चक दे इंडिया फिल्म से हॉकी खेल का परिचय, मैरी कॉम फिल्म से बॉक्सिंग खेल का परिचय, दंगल फिल्म से कुश्ती खेल का पस्चिय हैं तथा साथ में खेल एवं खेल से जुड़ी महिलाओं के बारे में जानकारी तथा उनकी उपलब्धियों का अध्ययन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय- खेल केंद्रित फिल्मों का अंतर्वस्तु विश्लेषण

इस अध्याय के अंतर्गत महिला खेल संबंधित फिल्म चक दे इंडिया, मैरी कॉम, दंगल अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया है। फिल्मों की भाषा,डायलॉग, समयावधि, संदेश, व्यवसाय, सामाजिक प्रभाव तथा पटकथा का अंर्तवस्तु विश्लेषण किया गया है। जिससे इन फिल्मों के प्रति समाज की रुचि का पता चलता है।

पंचम अध्याय- तथ्य प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण

इस अध्याय के अंतर्गत महिला खेल संबंधित फिल्मों के प्रति समाज, युवाओं का दृष्टिकोण कैसा है, तथा इन फिल्मों के माध्यम से समाज पर पडने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। समाज इस प्रकार की फिल्मों के बारे में क्या सोच रखता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषणकिया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि के माध्यम से आंकड़ोंको एकत्रित किया गया है।

षष्ट अध्याय- निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्याय में प्रस्तुत शोध अध्ययन का निष्कर्ष और सुझाव समाहित है।

परिशिष्ट

परिशिष्ट के अंतर्गत प्रस्तुत शोध अध्ययन में सहायक सामग्री प्रस्तुत की गई है। सर्वप्रथम जिस प्रश्नावली का उपयोग कर जानकारियां प्राप्त की गई हैं उसका नमूना हू-ब-हू प्रस्तुत किया गया है, तथा साथ में साक्षात्कार के प्रश्नों को भी शामिल किया गया है। महिला खेल केंद्रित फिल्मों की तस्वीरें तथा साथ में कुछ महत्वपूर्ण महिला खिलाड़ियों की तस्वीरें को समाहित किया गया है।